क्षमावाणी पर्व के अवसर पर माननीय लोकसभा अध्यक्ष का वक्तव्य

06.09.2020

नई दिल्ली

"मिच्छामि दुक्कडम"

परम पूज्य आचार्यगण, मुनिगण एवं जैन समाज के सभी पदाधिकारीगणों को एवं सभी संतो को मेरा सादर प्रणाम।

जय जिनेंद्र।

➢ श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन धर्म संरक्षिणी महासभा द्वारा वर्चुअल माध्यम से आयोजित सामूहिक क्षमावाणी पर्व में आप सब से जुड़कर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मैं यहां उपस्थित सभी धर्म गुरुओं और जैन समाज के प्रतिष्ठित जनों का नमन करता हूं।

➢ जैन समाज का राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र सेवा में व्यापक योगदानहै, समाज में सामूहिक उत्थान और जनहित के कार्यों में अग्रणी रहा हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में भी आपका योगदान और आपकी उपलब्धियां सर्वविदित हैं।

➢ भगवान महावीर ने मानवता के लिए धर्म, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य और क्षमा पर सबसे अधिक जोर दिया हैं। क्षमा का पर्व, क्षमा, अहिंसा और मैत्री का प्रतीक है, क्षमा में अपनत्व है..., संवेदना है..., क्षमा ही अहिंसा हैं..., क्षमा में नम्रता हैं..., विनम्रता है..., क्षमा मानवीय जीवन की आधारशिला है।

➢ आज का दिन क्षमावाणी के रूप में समाज के लिए आत्मशुद्धि का दिन है।महात्मा गांधी जी हमेशा कहा करते थे कि क्षमा करना तो सक्षम व्यक्ति की विशेषता होती हैं।

➢ क्षमावाणी पर्व को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देखने की जरुरत है। आधुनिक जीवनशैली में हमारे सामाजिक सरोकार कम होते जा रहे हैं। हम अपने में ही सिमटकर रह गए हैं और प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं।

➢ यही कारण है कि आज हम कई मानसिक और शारीरिक विकारों से ग्रस्त हो गए हैं। इनसे मुक्ति के लिए आज भगवान महावीर की शिक्षा के पूर्ण अनुसरण की आवश्यकता है।

➢ आज सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी के संकट से जूझ रहा है, इस संकट के काल में भगवान महावीर द्वारा दिए गए- संयम और त्याग की विचारधारा हम सब के लिए संजीवनी का कार्य कर रही हैं।

➢ क्षमा व्यक्ति और समाज में अहंकार की भावना को समाप्त करने का एक साधन हैं अगर हमे सामाजिक सद्भावना को बढ़ाना हैं तो अपने जीवन में क्षमा को आत्मसात करने की आवश्यकता हैं। क्षमा, व्यक्ति को सौहाद्र पूर्ण जीवन जीने की शिक्षा देता हैं

- आज समय की मांग है कि संपूर्ण मानवता को जैन समाज की इस विशेषता को अंगीकार करना चाहिए। जैन धर्म और दर्शन में आत्मशुद्धि पर बहुत बल दिया जाता। क्षमा करने वाला और जिसे क्षमा किया गया हैं दोनों को ही भगवान का आशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- जीवन की निरंतरता में...हमारे द्वारा... व्यवहार में... वाणी में... समझने अथवा समझाने में... रिश्तों एवं सामाजिकता को निभाने में...मेरे किसी भी कृत्य से हुये दुःख/कष्ट के लिए...जानकर या अनजाने में हुई कोई भूल या गलती से, मेरे शब्दों से, वचनों से, किसी कार्य से प्राणी मात्र के मन को दुःख पँहुचा हो तो मैं मन-वचन-काय पूर्वक समस्त जीवों से क्षमा मांगता हूँ।
- क्षमा करना सबसे बड़ी पूंजी है। एक बार पुनः क्षमा वाणी का यह अलौकिक अवसर हम सब को निर्मल करे।
- हम सभी भगवान महावीर के विचारों और आदर्शों को जीवन में आत्मसात करे। आत्मशुद्धि के महान पर्व के अवसर पर सभी को उत्तम क्षमा।

जय जिनेंद्र।